Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 20 March 2018 11:58

: □□□-□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ : □□ □□□□□ □□ □□□□□-□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□, □□□ □□ □□□□□-□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ : □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□, □□□□□ □□□□□-□□□□□□□□ □□ □□□ :

□□□□□ □□□□□

□□□□ : आबादी में तेंदुआ का आना इंसान पर करारा तमाचा है□

सहनशीलता के मामले में जंगली जानवरों का वाकई कोई सानी नहीं होती□ जानवरों की आबादी में जब इंसान हस्□तक्षेप करता है, तो भी जानवर उसे बर्दाश्□त कर लेते हैं□ लेकिन तब मुश्किल तब होती है, जब जंगल में होने वाले जानवरों के भोजन पर इंसान झपटता है□ ऐसे में जानवर भूख मिटाने के लि□ जंगल से बाहर निकलने पर मजबूर हो जाते हैं□ इसके बावजूद ऐसे जानवरों का निशाना इंसान नहीं होता, वे तो कुत्□ते, बकरी, बछड़ों की फिराक में होते हैं□ आप इतिहास टटोलिये तो, कि कब जंगली जानवर ने इंसान पर हमला किया□ जानवर तब ही इंसान पर हमला करता है, जब इंसान खुद ही इन जानवरों पर हमलावर हो जाते हैं□

ताजा प्रमाण है लखनऊ□ जहां गोसाईंगज इलाके में □क भूखा तेंदुआ अपनी भूख मिटाने और अपनी जान बचाने के भयावह संघर्ष से दो-चार हो रहा है□ आपको बता दें कि यह कोई अनोखा किस्□सा नहीं है लखनऊ का□ अभी □क महीना पहले भी □क तेंदुआ लखनऊ में आ गया था□ हालांकि करीब दो महीनों पहले से ही उसकी पदचाप माल, काकोरी, इटौंजा, कुर्सी आदि सुनायी पड़ रही थी□ इतना ही नहीं, आईआई□म के पीछे के आसपास नयी विकसित हो रहीं बड़ी कालोनियों में भी वह पहुंच गया था□ लेकिन हैरत की बात है कि वह इस पूरे दौरान केवल अपने भोजन तक ही सीमित रहा□ इंसान पर हमला करना तो दूर, उसने तो इंसान को डराने के लि□ □क बार भी दहाड़ नहीं मारी□

अपनी इसी छटपटाते पेट की भूख शांत मिटाने के लि□ यह तेंदुआ अमौसी के आसपास के इलाके तक पहुंच गया□ तो वन विभाग ने उसे दबोचने के लि□ हर कोशिश करनी शुरू कर दी□ इसमें सबसे बड़ा दर्दनाक तरीका था इस पूरे इलाके के जल-स्रोतों को बंद कर देना□ आप कल्□पना कीजि□ कि कोई भूखा प्राणी बिलबिला रहा हो, और उसको राहत दिलाने के बजाय हम उस बेचारे को पानी तक न दें□ तुर्रा यह कि उसके सामने प्राण तक के खतरे पग-पग में बिछा दिये गये हों, तो आपको कैसा लगेगा□

तेंदुआ □क ओर तो भूख से बिलबिला रहा था, और बिना पानी के छटपटा रहा था□ इसी बीच □क दारोगा जी ने निकाली अपनी पिस्□तौल और□ दाग दिया उस निरीह पर गालियां□ □क ही क्षण में उसका प्राणान्□त हो गया□ इसके पहले भी □क तेंदुआ ठाकुरगंज के पास मूसाबाग के इलाके में पहुंच गया था□ हालांकि यह स्□पष्□ट नहीं हो पाया कि यह वही तेंदुआ था जो अमौसी में मारा गया या फिर दूसरा□

हां, तेंदुआ को मारने वालों की हिमायत करने वालों की यह बात सही है कि तेंदुआ जंगल छोड़ कर आबादी में क्□यों घुसा और वहां शहरी जानवरों पर कहर

क्□यों बरपा रहा था□ लेकिन इस बात का जवाब कोई नहीं दे रहा है कि तेंदुआ, शेर, बाघ जैसे जंगली जानवरों के लि□ जंगल में जब प्रचुर मात्रा में भोजन योग्□य शिकार होने चाहि□, तो उसने सैकड़ों मील दूर लखनऊ जैसे महानगरों पर क्□यों हाथ-पांव फैलाये□ आप को बता दें कि शेर या बाघ जैसी बड़ी बिल्लियां की प्रवृत्ति जंगल के केंद्र-स्□थल में आवास खोजने की होती है, जबकि जंगलों के बाहरी इलाकों में तेंदुआ, चीता आदि अपना ठीहा खोजते हैं□

फिर सवाल तो इंसानों से ही है कि सन-84 में □क बबर शेर बहराइच, लखीमपुर, श्रावस्□ती, पीलीभीत जैसे घने जंगलों को छोड़ कर क्□यों इंदिरानगर और क्□यों महीनों तक घूमता रहा□ और आखिरकार सरकारी शिकारियों ने उसे गोली मार कर हमेशा के लि□ सुला दिया□ आज भी उस शेर की खाल में भूसा भर कर कुकरैल के म्□यूजियम में उसे प्रदर्शन की सामग्री के तौर पर पेश किया जाता है□ पिछले पांच बरसों के बीच में □क बाघ जंगलों को सैकड़ों मील की दूरी नाप कर लखनऊ के ककोरी, माल आदि बस्तियों में मटरगश्□ती करता रहा था□

इन तर्कों की बिना पर सवाल तो हर शख्□स से होना ही चाहि□ कि क्□या ऐसे में इन जानवरों को इतनी निर्दयता के साथ पेश होना चाहि□□ जंगल के प्राणी भी हमारे आश्रित होते हैं□ इसलि□ हम ने उनके रहवास को सुरक्षित रखा है□ लेकिन इसके बावजूद जिस तरह घुसपैठ जंगलों में होती है, वह इंसान की निष्□ठुरता की पराकाष्□ठा है, स्□वार्थता की सीमा से परे है□ जो जंगल छोड़ कर आबादी में घुसपैठ कर रहे हैं, उनके प्रति हमें संवेदनता के स्□तर पर देखना-सोचना चाहि□□

सच बात यह है कि हम ऐसे घुपैठिये जानवरों को अपने शिशु की तरह स्□नेह नहीं दे सकते□ सच बात है□ लेकिन उनके प्रति ऐसा व्□यवहार तो कर ही सकते हैं, जिसमें हम अपने इंसान होने की शर्त को पूरा कर दें□ संवेदनशील हो सकें□ तरीके खोजें कि भविष्□य में ऐसे जंगलों से इन जानवरों को अपना घर छोड़ कर आबादी की ओर न आना पड़े□ और अगर आ ही जा□, तो ऐसी प्रभावी कोशिशें अपना कर उन्□हें वापस उनके रहवास तक सुरक्षित करवा दिया जा□□

यह उनकी उनकी सुरक्षा का मामला तो है ही, लेकिन उससे भी ज्□यादा हमारी सुरक्षा, हमारी संवेदनशीलता और इस सृष्टि में सह-अस्तित्□व का भी प्रश्□न है□ आबादी में घुस आ गये जानवर को मौत के घाट उतार दिया जाना हमारी इंसानियत पर कलंक है, असफलता है, पाखण्□ड है□

□क महीना हो चुका है अमौसी में तेंदुआ को मौत के घाट उतारे हु□□ लेकिन हत्□याकाण्□ड की जांच के लि□ □क जांच-कमेटी भी बनायी गयी थी□ जिसे पता करना था कि जब तेंदुआ को पकड़ने की पूरी तैयारियां थीं, तो उसे क्□यों मारा गया□ क्□या कारण थे उसकी हत्□या के□ लेकिन शर्मनाक बात यह है कि इस कमेटी इस मामले में □क भी जिम्□मेदार विभाग के किसी भी अफसर का बयान तक नहीं ले पायी है, जबकि उसे यह रिपोर्ट □क पखवाड़े में ही सौंप देनी थी□ अब जरा उस हत्□याकांड को अपने किसी आत्□मीय शख्□स की घटना के तौर पर देख-मानिये, जिसे □नकाउंटर में मौत के घाट उतार दिया गया हो□ तब ही आपको अहसास हो पायेगा कि किसी मौत का दंश कैसा होता है□ सच बात यह है कि हादसे में पुलिस के इंस्□पेक्□टर ने बाकायदा अपनी मर्दानगी दिखाने के लि□ ही इस तेंदु□ को मार डाला था□ यह हत्□याकांड हमारी पुलिस की क्रूर और निर्मम कार्यशैली की प्रतिबिम्□ब है, जिसकी शुरूआत भले ही ऐसे जानवरों से हो, लेकिन उसका अंत आम निरीह-निर्दोष आदमी तक होता है□

चलते-चलते आपको मैं आपको अपनी फेसबुक अपडेट भी पढ़वा दूं:-

Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 20 March 2018 11:58

क्□या क्हा ! लखनऊ में फरि □कतेंदुआ घुस आ गया है? तो क्□या हुआ? याद नहीं है क िपछिले महीने भी तो □कतेंदुआ आया था? फरि क्□या, फारेस्□ट वाले टापते ही रह गये, लेकनि दारोगा जी ने पटिपटिया नकिाली और दाग दयिा ससुरे केपछिवाड़े पर पांच गोली□ राम राम सत्□त हो गया ससुरे क□

तो भइया, टेंसन मत लो□ जोगी-पुलसि केजाबांज पुलसिवालों क ो बुलाओ□ □कसेकेंड में तयिां-पांचा कर देंगे इस तेंदुआ क□

हमारे दारोगा लोग सूरमा-भोपाली हैं□ □नकाउंटर स्□पेशलसि्□ट□

गोली अंदर, प्राण बाहर

चल बे, जल्□दी चल□ काम नपिटा कर चलो थानों में गाली-सत्□संग करने भी जाना है यार□